गोवा विश्वविद्यालय

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

हिंदी अध्ययन शाखा

एच आई एन-528

भाषा और साहित्यः सामाजिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण

विषय- "नावशी गांव पर रिपोर्ट"

8/05/24.

12/20

नाम- रिया गोविंद पैंगिणकर

एम. ए. प्रथम वर्ष

सत्र- II

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU GOA

	अनुक्रमणिका
1	प्रस्तावना
2	सर्वेक्षण क्या है?
3	नावशी गाँव का परिचय
4	सर्वेक्षण
5	शिक्षा
6	हिंदी भाषा का ज्ञान
7	व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति
8	लोकसंस्कृति
9	गाँव की समस्याएं
10	गाँव के लोगों की अपेक्षाएं
11	निष्कर्ष

प्रस्तावना

'भाषा और साहित्य : सामाजिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण' हमारे पाठ्यक्रम का एक विषय है। इसके अंतर्गत हमने नावशी गाँव का सामाजिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण किया। यह मेरा पहला सर्वेक्षण था, जिसका अनुभव अविस्मरणीय रहा। इससे हमें पता चला कि हमें जीवन में बहुत कुछ सीखना है। हमें अपनी संस्कृति और पर्यावरण दोनों को सुरक्षित रखना है।

सर्वेक्षण के कुछ दिनों के बाद हमारी परीक्षा होने वाली थी। वो भी एक साथ तीन जिसका अंदाजा हमें नहीं था। साथी हमें प्रस्तुतीकरण करना था और स्वाध्याय जमा करने थे। पाठ्यक्रम के वजन से हम गुजर रहे थे। हमेशा घर में रहने के कारण हम सभपर तनाव बढ़ रहा था। हमें बाहर की ताजी हवा चाहिए थी। लेकिन हम बाहर नहीं जा पा रहे थे। फिर भी हमने एक दूसरे का हौसला बढ़ाया और रुके नहीं। मुझे पहाड़ चढ़ने की और कहीं दूर सफर करने की आस थी। सर्वेक्षण के कारण हम घर से बाहर निकल पाए और नावशी जैसे सुंदर गाँव में जा पाए।

वहां जाकर मुझे बहुत खुशी हुई की सर्वेक्षण के लिए इस गाँव का चुनाव हुआ। यहां की हरियाली मनमोहक थी और लोग बहुत अच्छे थे। सभी लोगों ने हंसमुख चेहरे से हमारे साथ वार्तालाप किया। मुझे कहीं भी असुविधाजनक नहीं लगा।

सर्वेक्षण क्या है?

सर्वेक्षण एक लक्ष्य के साथ, लक्षित समाज के बीच में जाकर, लोगों से साक्षात्कार करके, उनसे सीधा वार्तालाप करके आधार-सामग्री या डेटा प्राप्त करने की एक शोध प्रक्रिया है। यहां पे डेटा इकट्ठा करने के लिए दर्शकों से

प्रश्न पूछे जाते हैं। ये प्रश्न पूर्वनिर्धारित होते हैं। एक सर्वेक्षक प्रश्नों की पूर्वनिर्धारित सूची तैयार करता है जो उसे गति और सहायता प्रदान करती है। इस सूची के कारण वह अपने उद्देश्य के साथ समय पर पर्याप्त सामग्री इकट्ठा कर पाता है। सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य डेटा संग्रह है। यह डेटा उचित निर्णय लेने में सहायता करता है।

सर्वेक्षण आवश्यक और महत्वपूर्ण है। समाज के विभिन्न मामलों की स्थिति का विश्लेषण करना इसी से संभव है। इसी की सहायता से सामाजिक या आर्थिक नीतियों को तैयार किया जाता है। यह सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक प्रक्रियाओं को समझने और सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

नावशी गाँव का परिचय

नावशी गाँव नैसर्गिक सुंदरता से परिपूर्ण, बांबोलिम में स्थित, गोवा विश्वविद्यालय के क्षेत्र में एक छोटासा गाँव है।

गोवा विश्वविद्यालय के राजमार्ग पर एक अंदर जाती छोटी सड़क दिखाई देती है। वह सड़क एक ढलान है जो नीचे जाती है। ढलान के ऊपर दाहिनी ओर एक छोटी सी दुकान है। ढलान के दोनों बाजू में मनोहर वनस्पति है। जो आगंतुकों का हवाओं के साथ हमेशा स्वागत करती है। यहां की प्रवाहित और ताजी हवा मस्तिष्क को शीतल और साफ करती है। जिससे मन और मस्तिष्क दोनों को सुकून मिलता है।

नावशी गाँव में लगभग 400-500 लोग रहते है। नावशी गांव में अधिकतर गावडा समुदाय के लोग रहते हैं।इस गांव में एक आंगनवाड़ी है। यातायात के लिए गांववालों को राजमार्गों पर आना पड़ता है। बसें निचे नहीं आती। गांव में अस्पताल और स्कूल नहीं हैं जिसके कारण उन्हें कुजिरा बंबोलीम जाना पड़ता है। गांववालों को इससे कोई दिक्कत नहीं कुजिरा बहुत पास है।

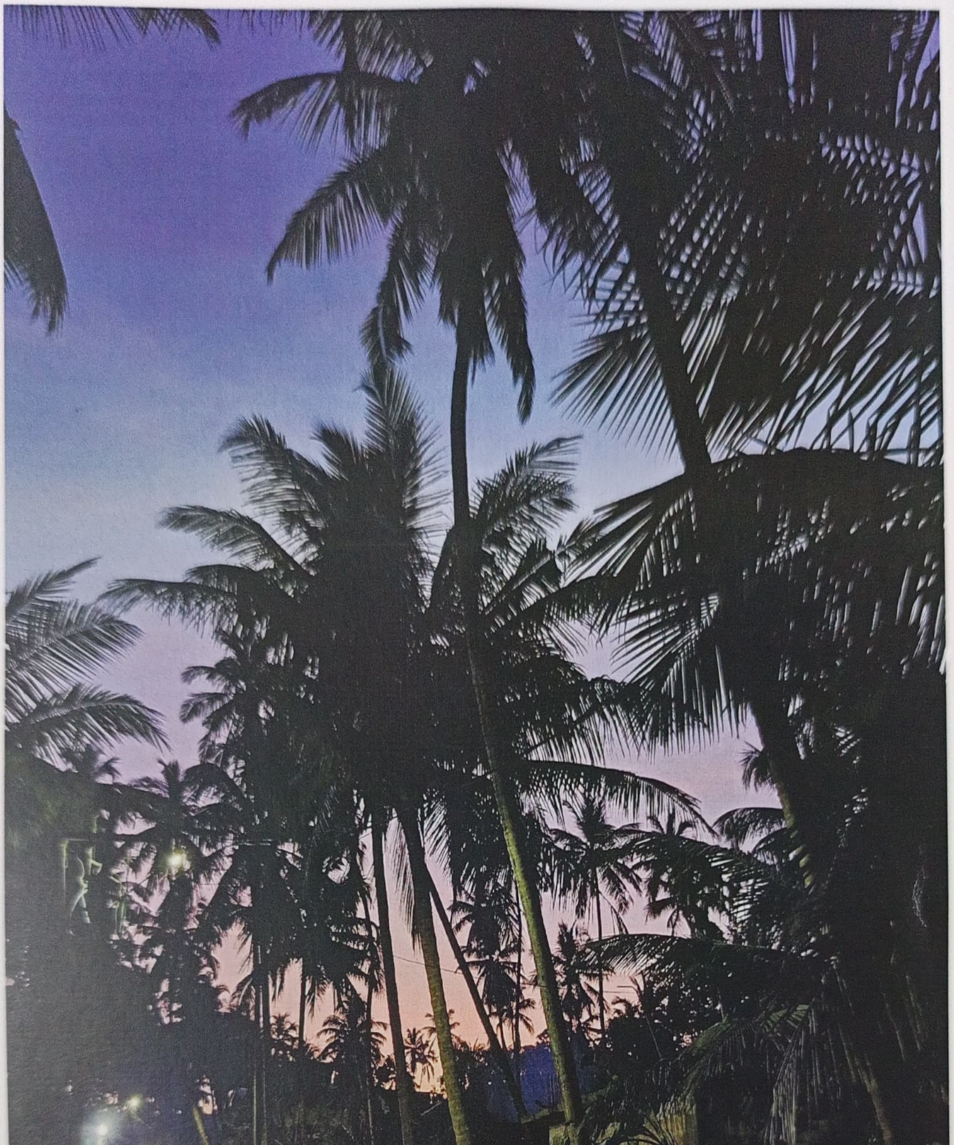

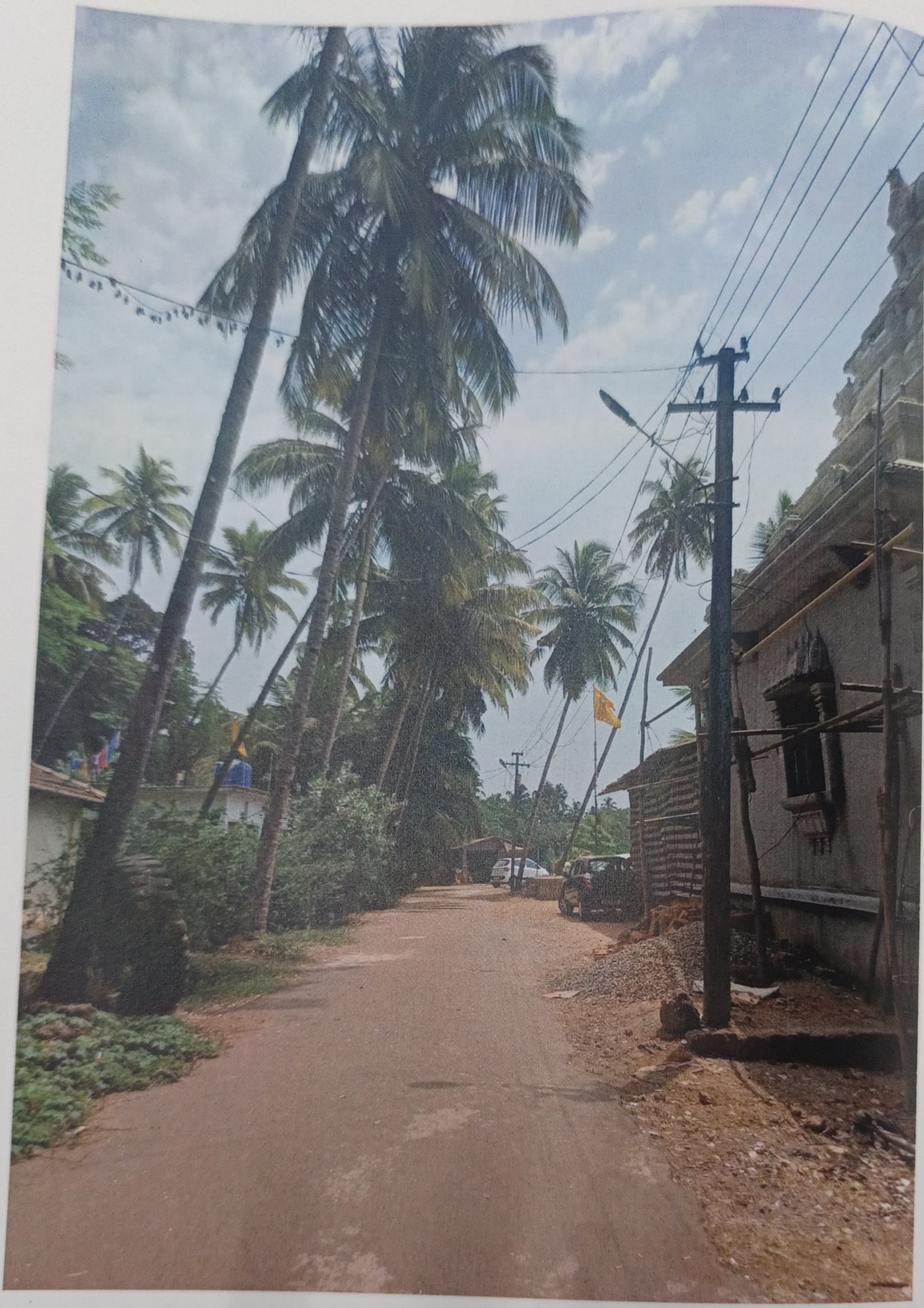

सर्वेक्षण

हमलोग सगुन कांकोणकर, सोमनाथ नायक कांकोणकर, मंगला कांकोणकर, नरेश कांकोणकर, शामी दिवकर, शाश्वत पालकर काशीनाथ आशेरी और कई लोगों के घर गए।

सगुन कांकोणकर का घर

सगुण कांकोणकर का एक लड़का सरकारी कर्मचारी है। उनकी बहु "आर्ट और कल्चर" में काम करती है। दुसरी बहु स्कूल में अध्यापिका है। और एक लड़का कॉन्ट्रैक्ट लेने का काम करता है। सगुण जी एक कारीगर है।

सगुण जी- "अहोय मरीना प्रोजेक्ट ही सारी मुसीबतों का जड़ है। अगर ये प्रोजेक्ट आगया तो सबकुछ तबा हो जाएगा। पूरा गाँव बर्बाद हो जाएगा। अभी तो लोगों ने विद्रोह किया है जिसके कारण वे चुप है। यहां पे बहुत सारे लोगों के पास काम नहीं है। यहां पे अधिकतर मछुआरे है। उनकी रोजी-रोटी इसपर आधारित है। अगर ये प्रोजेक्ट यहां पर लाया तो मछुआरे पानी मे जा नहीं पाएंगे। पोर्ट बनाने केलिए मरीना वाले पानी सूखा देंगे। जब उनका ज़मीन पर पूरा अधिकार होगा तब वे गाँववालों को यहा से जाने केलिए कहेंगे।

अगर ये प्रोजेक्ट आ गया तो सिर्फ नावशी गाँव ही तबाह नहीं होगा। ब्लकि और कई गाँव इसके शिकार हो जाएंगे। शिरदोना, सवोध्या भी तबाह हो जाएंगे। इस प्रोजेक्ट को ताकत केंद्र सरकार से मिलती है।हमारे पीछे पढ़े-लिखे लोग है, कायदे जानने वाले लोग है,इसी कारण हम विद्रोह करपा रहें है।

उन्होंने कहा है कि वे लोग हमें काम देंगे। लेकिन हमे पता है कि वे लोग जूठ बोल रहे है।

आल्दिया ने एक होटल बांदा था। वहां पे हमारे कुछ लोगों को काम पर रखा था। लेकिन एक साल के बाद उन्हें बिना किसी कारण के निकाल दिया। हमारे मछुआरों को सिक्युरिटी का काम दिया लेकिन दो तीन सालों बाद निकाल दिया।

मुजे हिन्दी बोलनी उतनी अच्छी नहीं आती। मुजे सिखने का कोई मौका नहीं मिला। मेरा कोई नहीं था इस दुनिया में।"

हिंदी भाषा का ज्ञान

हिंदी के विद्यार्थी होने के नाते 'हिंदी भाषा का ज्ञान' हमारे सर्वेक्षण केलिए प्रमुख विषयों में से एक था। इसके अंतर्गत हमें देखना था कि गाँव के कितने लोग हिंदी भाषा समझते हैं ; कितने लोग हिंदी भाषा में पढ़ लिख सकते हैं और हिंदी भाषा का ज्ञान उन्होंने कहां से प्राप्त किया हैं?

सर्वेक्षण करने पर हमें पता चला कि गाँव में तीन प्रकार के लोग हैं: 1)लोग जो हिंदी में बोल सकते हैं; 2) लोग जो हिंदी समझते हैं लेकिन बोल नहीं सकते ; 3 जो लोग हिंदी नहीं समझते। पहले श्रेणी में बच्चे, युवा पीडी और कुछ मध्यम आयु के लोग है जो हिंदी में बोल सकते हैं। दूसरे श्रेणी में मध्यम आयु के लोग हैं जो हिंदी समझते है लेकिन बोल नहीं सकते। तीसरी श्रेणी में गाँव के अधिकांश बुजुर्ग है जो हिंदी नहीं समझते।

बच्चों के माता-पिता ने बताया कि कार्टून के कारण उनके बच्चों को हिंदी बोलनी आती है। कुछ लोगों ने बताया कि हिंदी पाठ्यक्रम का विषय है इसलिए उनके बच्चों को हिंदी में लिखना और बोलना आता है। इसके साथ उनके बच्चे हिंदी में कार्टून देखते हैं। युवा पीढ़ी से पूछने पर उन्होंने बताया कि उन्होंने हिंदी भाषा का ज्ञान फिल्में देखकर ग्रहण किया है।

व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति

यहां पर मछुआरे, सरकारी कर्मचारी, कारीगर, किसान हर प्रकार के व्यवसायी रहते हैं। लेकिन अधिकतर मछुआरे हैं। इनकी खेती कालापुर में है।

सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश

गांव में दो मंदिर है और दो "खूरीस" है। एक मंदिर सातेरी का है और एक गणपति का।

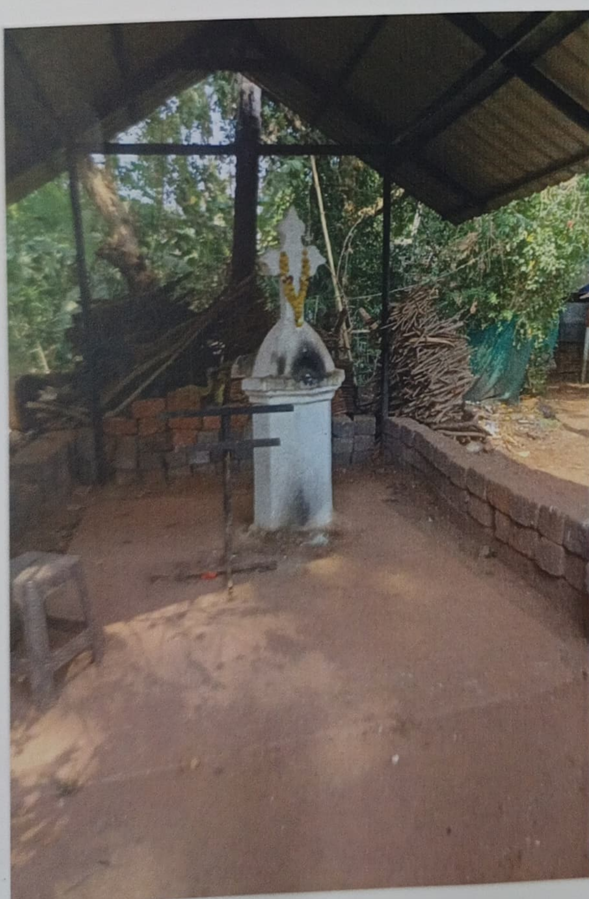

GA07L0228

लोकसंस्कृति

गाँव में 'धालो' और 'जागोर' दोनों महत्वपूर्ण त्यौहार है।

धालो (लोकनृत्य)

गोवा के सभी गाँवों में महिलाएं धालो खेलती है।लेकिन नावशी एक एकमात्र गाँव है जहां पुरुष धालो खेलते हैं।

जिस जगह पर धालो खेला जाता है उसे "माण" कहते हैं। माण पर पुरुष स्वयं घूमते हुए झट से या धीमी गति में एक दूसरे का चक्कर लगाते हैं। जिससे साथियों की अदला बदली होती है। वे यह करते वक्त लगतार हाथों से तालियां बजाते है। सभ नाचते-नाचते गाते हैं। तुलसी का पौधा बीच में रहता है।

समय

यह लोकनृत्य जनवरी के पूर्णिमा के दिनों में खेला जाता है। इसकी कोई निश्चित या निर्धारित तारीख नहीं होती। यह लोकनृत्य 2 घंटे का होता है। 10 से 12 बजे।

गीत

इस लोकनृत्य में लोकगीत समाहित है।
नावशी गाँव में खेले गए धालो के इन गीतों में रामायण के कुछ प्रसंग होते हैं। विशेषकर सीता के अपहरण का प्रसंग। यह हृदय स्पर्शी होता है क्योंकि इसमें राम की वेदना और कष्ट संगीत के माध्यम से व्यक्त होती है। ग्राम देव रामनाथ और सातेरी के साथ-साथ भगवान गणपति को भी पुकारा जाता है।

इसमे 'कासाळे' का प्रयोग होता है।

यहां पर विशेष वेशभूषा का प्रयोग नहीं होता।

जागोर

जागोर का अर्थ होता है पूरे रात जागना।

"जागोर" एक पारंपरिक लोकनाट्य, जिसका वार्षिक रूप से प्रदर्शन होता है। लोगों का मानना है कि जागोर के प्रदर्शन से 'ग्राम देवता' प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद और सुरक्षा प्रदान करते है।

यह गोवा का प्रचलित लोकनाट्य है। यह पूरे रात चलता है। नावशी में यह लोकनाट्य पहले और दूसरे शनिवार को मनाया जाता है।

गीत

जागोर की शुरुआत आदीवन गीत से की जाती है। जिसमें कई देवताओं को सम्मान दिया जाता है। उन्हें पुकारा जाता है।

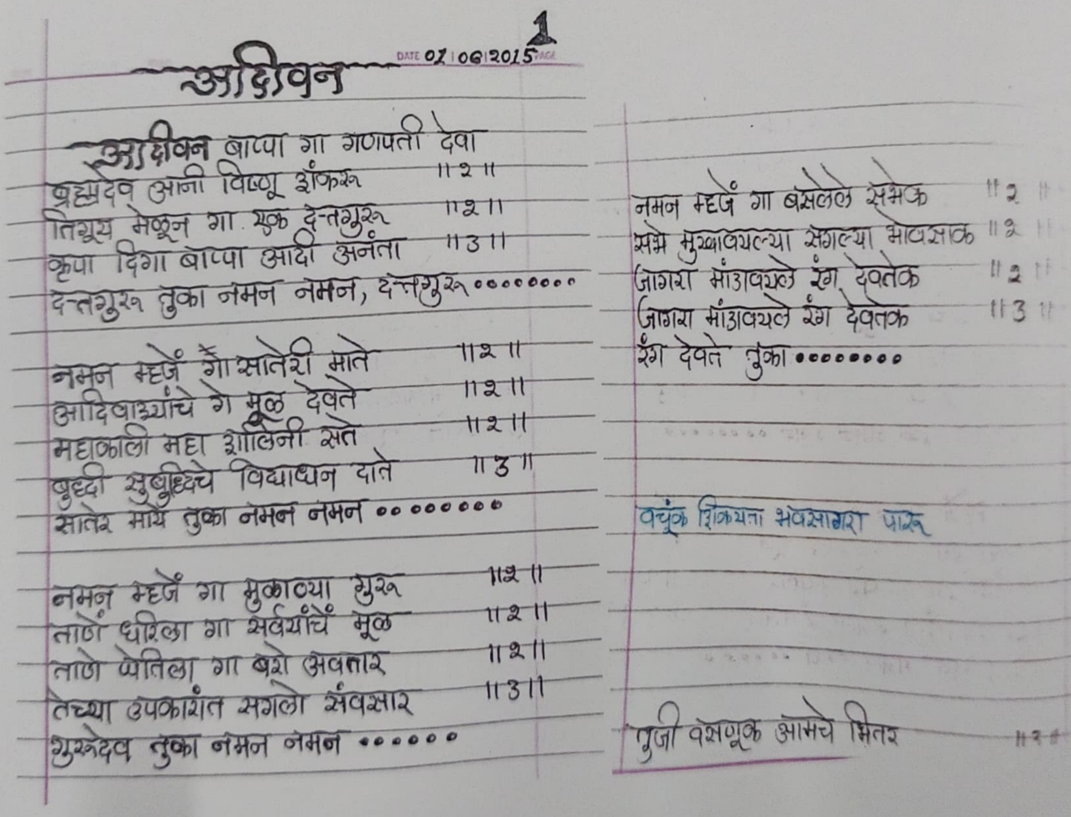

अदीवन
DATE 01 | 06 | 2015 PAGE 1

आदीवन बाप्पा गा गणपती देवा
ब्रह्मदेव आनी विष्णू शंकरू ॥२॥
तिघूय मेळून गा एक दत्तगुरू ॥२॥
कृपा दिगा बाप्पा आदी अनंता ॥३॥
दत्तगुरू तुका नमन नमन, दत्तगुरू ....

नमन म्हजें गो सातेरी माते ॥२॥
आदिवाश्यांचे गे मूळ देवते ॥२॥
महाकाली महा शालिनी सते ॥२॥
बुद्धी सुबुद्धिचे विद्याधन दाते ॥३॥
सातेर मायें तुका नमन नमन ....

नमन म्हजें गा मुकाव्या गुरू ॥२॥
ताणें धरिला गा सर्वयांचें मूळ ॥२॥
ताणे घेतिला गा बरो अवतार ॥२॥
तेच्या उपकारांत सगलो संवसार ॥३॥
गुरूदेव तुका नमन नमन ......

नमन म्हजें गा बसलेले सभेक ॥२॥
सभे मुखावयल्या सगल्या भावसाक ॥२॥
जागरा मांडावयले रंग देवतेक ॥२॥
जागरा मांडावयले रंग देवतेक ॥३॥
रंग देवते तुका ....

वचूंक शिकयता भवसागरा पारू

तुजी वेसणूक आमचे भितर ॥२॥

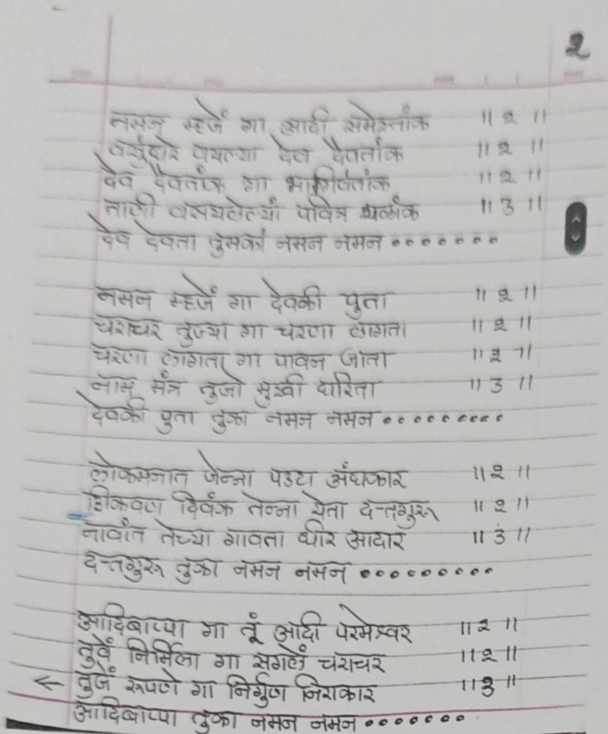

2

नमन म्हणें गा आदी समेस्तांक ॥१॥
वसुंधरे पयल्या देव दैवतांक ॥१॥
देव दैवतांक गा भारतिवतांक ॥२॥
नाठी वसयलेल्यां पवित्र स्थळांक ॥३॥
देव देवता तुमकां नमन नमन ....

नमन म्हणें गा देवकी पुता ॥१॥
चराचर तुज्या गा चरणा लागता ॥१॥
चरणा लागता गा पावन जाता ॥२॥
नाम मंत्र तुजो सुखी धारिता ॥३॥
देवकी पुता तुका नमन नमन ....

लोकमनात जेन्ना पडटा अंधकार ॥१॥
शिकवण दिवंक तेन्ना येता दत्तगुरु ॥२॥
नावांत तेच्या गावता धीर आधार ॥३॥
दत्तगुरु तुका नमन नमन ....

आदिबाप्पा गा तूं आदी परमेश्वर ॥१॥
तुवें निर्मिला गा सगळें चराचर ॥२॥
तुजें रूपणे गा निर्गुण निराकार ॥३॥
आदिबाप्पा तुका नमन नमन ....

समय के साथ गीतों में बदलाव आता है। समय और आवश्यकता अनुसार नए गीतों को मिलाया जाता है। लेकिन धार्मिक गीत जैसे आदीवन में कोई बदलाव नहीं आता।

इसमें घुमत, पेटी, तबला, कासाळे का प्रयोग होता है।

यह लोकनाट्य धार्मिक मेहता से मनोरंजन तक आ जाता है। इसके नाटक में समाज के विविध लोगों को दर्शाया जाता है। जैसे की मार, ऋषि, उनके आश्रम के शिष्य आदि। इसमें लगभग 50 पात्र होते हैं।

वेशभूषा

हर एक पात्र के लिए अलग कपड़े होते हैं।
जागोरयो के लिए अलग वेशभूषा होती है और अन्य पात्रों के लिए अलग।

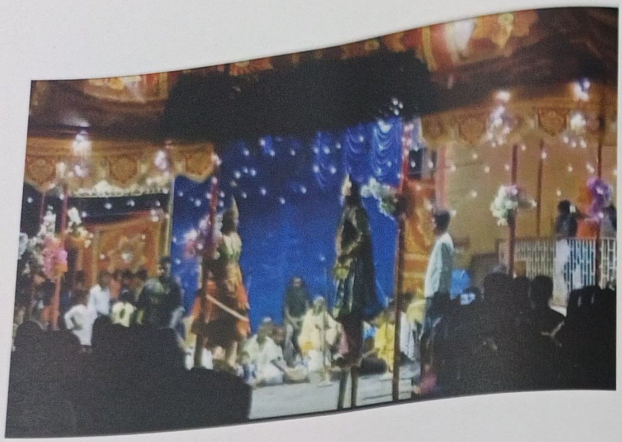

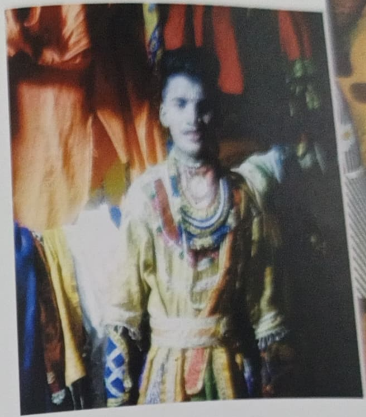

गाँव की समस्याएं

“अहोय मरीना प्रोजेक्ट" एक बहुत बड़ा प्रोजेक्ट है। यह गांव की सबसे बड़ी समस्या है। परिकर ने इस प्रोजेक्ट को नकारा था। "गोवा राज्य जैव विविधता बोर्ड" की भी बड़ी भूमिका थी। 15 लैक वर्ग मीटर की पूरी ज़मीन इसके अंतर्गत आएगी।

COASTAL DEVELOPMENT

> The AHOY Marina is primarily a facility designed to **accommodate small pleasure boats, with space to accommodate two larger 50m-long yachts**, besides small vessels for tourism

> The proposed marina is envisaged to **accommodate 239 boats**

> Additional infrastructure will be provided to facilitate all activities pertaining to **holidaying, pleasure spending, staying, swimming, playing, shopping and business/ cultural meets and festivals**

> **Parking and maintenance** of the boats will be **carried out at the marina**

इसके अनुसार

- अहोय मरीना मुख्य रूप से छोटे ‘आनंद नौकाओं’ को समायोजित करने के लिए डिज़ाइन की गई एक सुविधा है, जिसमें दो बड़ी 50 मीटर लंबी याचों को समायोजित करने के लिए जगह है।
- इसमें पर्यटन के लिए छोटे जहाज भी होंगे।
- मरीना में नौकाओं की पार्किंग और रखरखाव किया जाएगा।
- प्रस्तावित मरीना में 239 नौकाओं को शामिल करने की परिकल्पना की गई है।
- मरीना परियोजना में छुट्टियां मनाने, मौज-मस्ती करने, रहने, तैराकी करने, खेलने, खरीदारी करने और व्यापार/सांस्कृतिक समारोहों से जुड़ी सभी गतिविधियों को सुगम बनाने के लिए अतिरिक्त बुनियादी ढांचा प्रदान किया जाएगा।

यह जो प्रोजेक्ट आ रहा है वह आम जनता के लिए किसी भी तरह उपयोगी नहीं है। पहले यह प्रोजेक्ट उच्च अंत पर्यटन (High-End Tourism) ke अंतर्गत आता है। मतलब अमीर लोग ही इसका आनंद ले सकते हैं। ऐसे प्रोजेक्ट ज्यादातर यूरोपीयन देशों में होते हैं। लेकिन केरल में भी एक ऐसा प्रोजेक्ट है।

मरीना के इस प्रभाव को दो श्रेणी में विभाजित करते हैं

- आम लोगों पर हो रहा प्रभाव

Navshi के लोग अधिकतर मछुआरे है। पहले की पीढ़ी अपनी रोजी-रोटी के लिए समुद्र पर आश्रित है। वे लोग और कोई दूसरा धंधा नहीं करते। इसी से वे सब संतुष्ट है। अगर मरीना यहां पर बन गई तो मछुआरे मच्छी पकड़ने के लिए पानी में नहीं जा पाएंगे। इससे navshi ही नहीं बल्कि वास्को, chonna, madkai, nerul भी बुरी तरह से प्रभावित होंगे।

और जब नौकरी की बात आती है गांव वालों को पता है कि उन्हें कोई नौकरी नहीं मिलेगी। मरीना वाले उनसे सीधा झूठ बोल रहे हैं। जब आल्दिया ने अपना होटल बनवाया था तब गांव वालों को काम पर रखने का वचन दिया था। लेकिन जब उन्होंने कुछ मछुआरों को सिक्योरिटी की नौकरी दी तो 3 साल के अंदर ही उन्हें निकाला गया। इसी वजह से उन्हें अच्छे से पता है कि उनके साथ सिर्फ धोखा होगा। और मरीना ज्यादा से ज्यादा नाव धोने का काम ही दे सकता हैं।

- पर्यावरण पर हो रहा प्रभाव

"गोवा राज्य जैव विविधता बोर्ड" ने navshi को "Ecologically Fragile Area" बताया है। नावशी का यह क्षेत्र मछली का प्रजननक्षेत्र है। यह पे "Windowpane oyster"(meandi) जेसी लुप्तप्राय प्रजातियां मिलती है।

अगर यहां पर ड्रेजिंग होगी तो जल प्रदूषण होगा, समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा, ड्रेजिंग के दौरान टॉक्सिक रिलीज होती है जो सभी के लिए हानिकारक है।

एक एनजीओ के अनुसार करोना के समय पर गवर्नमेंट ने 32 अमेंडमेंट्स किए जिसका फायदा इन्ह कंपनीवालों कोही हुआ। ऐसा ही करके कई अन्य

जगहों पर पर्यावरण का नुकसान भारी मात्रा में हुआ है। मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत के अनुसार इसका विद्रोह कुछ ही लोग कर रहे है। लेकिन ये कभी भी गांव वालों के पास नहीं गए।

"आल्दिया"

यह कंपनी गांव में पहले से ही पेड़ पौधों को नष्ट करने पर लगी हुई हैं। और उसमें सफल भी हो गई है।

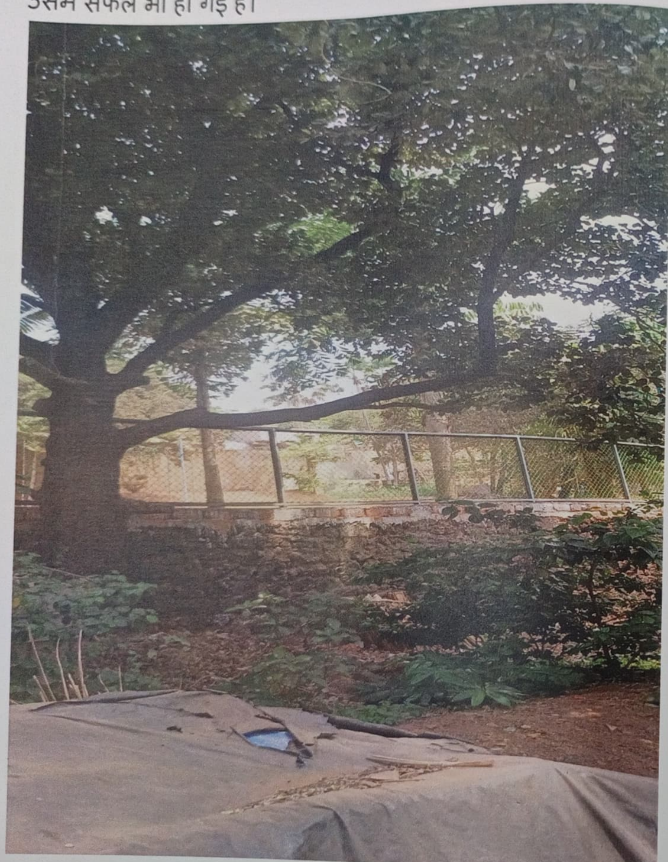

उन्होंने बिना गांव वालों की परमिशन के उनके पेड़ पौधों को काट दिया।

गाँव के लोगों की अपेक्षाएं

गांव के लोगों की सबसे बड़ी अपेक्षा यही है कि "अहोय मरीना प्रोजेक्ट" उनके गांव में कभी ना आए। जिससे वे अपनी जिंदगी शांति से जी सके। गांव के लोग अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी से खुश है।

वे पर्यावरण को "अहोय मरीना प्रोजेक्ट" और "आल्दिया" कंपनी से बचाना चाहते है। इसके साथ वे अपना व्यवसाय शांतिपूर्वक तरीके से करना चाहते हैं।

निष्कर्ष

नावशी बहुत सुंदर गांव है। लोग यहां पर प्यार से रहते हैं। जागोर और धालो यहां की लोकसंस्कृति है। गांव वालों के लिए "अहोय मरीना प्रोजेक्ट" और "आल्दिया" एक बड़ी समस्या है। वे पर्यावरण को "अहोय मरीना प्रोजेक्ट" और "आल्दिया" कंपनी से बचाना चाहते है। और अपना व्यवसाय शांतिपूर्वक तरीके से करना चाहते हैं।